* ओ३म् *

सम्वत् १९८९ वि०   सन् १९३२ ई०

आर्य्य समाज लुधियाना

का

सचित्र

पचास वर्षीय इतिहास

लेखक—

बाबूराम गुप्त मन्त्री आर्य्यसमाज
लुधियाना

मूल्य ॥)   विद्यार्थियों से ।≈)

भीमसेन विद्यालङ्कार के प्रबन्ध से—नवयुग प्रिंटिङ्ग प्रेस, १७ मोहनलाल रोड,
लाहौर में मुद्रित ।

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर ११३२

श्री १०८ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज।

भूमिका

इतिहास पुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम् (छान्दोग्योपनिषद्)

अन्धकार है वहां, जहां रविवास नहीं है।
है निर्जीव वह देश, जहां इतिहास नहीं है॥

पाठकगण ! उपनिषदों ने इतिहास की प्रशंसा करते हुए इतिहास को पाँचवां वेद बतलाया है। इतिहास से ही शिक्षा और ज्ञान की वृद्धि और अपने पुरुषाओं के सच्चरित्र का बोध होता है। इतिहास ही जाति और राष्ट्र का पथदर्शक है, जिस जाति का कोई इतिहास नहीं है वह जाति निर्जीव है और उन्नति के शिखर पर पहुंचने में असमर्थ रहती है। अतः संसार की सब जातियां अपने प्राण देकर भी अपने इतिहास की रक्षा में तत्पर रहती हैं। हमारे पूर्वजों ने भी इतिहास रक्षार्थ प्रयत्न किया है। इसी भाव से प्रेरित होकर आर्य्य समाज लुधियाना की अर्द्धशताब्दी के उपलक्ष्य में इस समाज का पचास वर्षीय इतिहास आपके समक्ष उपस्थित करता हूं।

आर्य्यसमाज लुधियाना ने गत ५० वर्षों में क्या कुछ किया ? किस प्रकार श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज का इस नगर में शुभागमन और उनके द्वारा वैदिक धर्म्म का बोया हुआ बीज सफल हुआ ? किस तरह थोड़े से आर्य्य पुरुषों ने आज से ५० वर्ष पूर्व आर्य्य समाज की स्थापना की और किस तरह उन महानुभावों ने अपने पीछे आनेवालों के लिये रास्ता साफ किया यह सब बातें संक्षेप से आपको दर्शाने का यत्न किया गया है।

इस इतिहास लेखन में श्री ला० उमरावसिंह जी (भूतपूर्व प्रधान आर्य्यसमाज लुधियाना ने देहरादून से यहां आकर और एक सप्ताह ठहर कर) ने जो सहायता दी है, उसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूं।

२१—१०—३२

बाबूराम गुप्त
मन्त्री आर्य्य समाज
लुधियाना

ओ३म्

ओ३म् । विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ।।

आर्य्य समाज लुधियाना का पचासवर्षीय इतिहास

लुधियाना पञ्जाब के प्रसिद्ध नगरों में से एक नगर है और पञ्जाब का प्रवेशद्वार है। इसकी जन संख्या १६३१ ई० की मनुष्यगणना के अनुसार लगभग ६०००० है। नगर की रचना बड़ी सुन्दर व जलवायु बड़ा स्वास्थ्यप्रद है। यहां के निवासी बड़े धार्म्मिक श्रद्धालु प्रेमी और अधिकतर व्यापारी हैं। शिल्प में यह नगर पश्चिमीय देशों तक भी प्रसिद्ध है। इस ज़िला में जगरांव नगर जगत्प्रसिद्ध पञ्जाब केसरी श्री ला० लाजपतराय जी और श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज की पुण्य जन्मभूमि है। श्री मुन्शी कन्हैयालाल जी अलखधारी (जो आर्य्यजाति के सच्चे हितैषी और उच्चकोटि के लेखक थे) भी इसी लुधियाना नगर के निवासी थे। धार्मिक संसार में अलखधारी जी के तर्कपूर्ण ग्रन्थों ने अवैदिक विचारों के स्थान पर शुद्ध वैदिक विचार रखे और मुन्शी जी की लिखी पुस्तक कुलियात अलखधारी के नाम से प्रसिद्ध हुई। उस लेखमाला ने अपने समय में सत्य के प्रचार में बड़ा कार्य्य किया। इन्हीं मुन्शी जी की पुण्य प्रेरणा से श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज इस नगर में पधारे।

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का लुधियाना में आगमन

वैशाख वदी १ संवत् १६३४ तदनुसार ३१ मार्च सन् १८७७ को श्री स्वामी दयानन्द जी ने अपने आगमन से इस नगर को पवित्र किया और १६ अप्रैल तक इस नगर में लाला बंशीधर वैश्य के बाग में (जो अब राय साहिब ला० शिवप्रसाद जी खज़ाँची के अधिकार में और राम निवास के नाम से प्रसिद्ध है) निवास किया।

श्री स्वामी जी महाराज का सबसे पहला व्याख्यान वैशाख वदी दो १६३४ तदनुसार प्रथम अप्रैल १८७७ को श्री ला० जट्टमल साहिब खज़ाँची के चौड़ा बाज़ार वाले मकान में हुवा।

इस नगर के अपने निवासकाल में श्री स्वामीजी महाराज ने वैदिक धर्म्म का प्रचार किया। पादरी बैरी साहब व अन्य कई सज्जनों की शंकाओं का समाधान किया और सहस्रों नरनारियों को अपने सदुपदेशों द्वारा कृतकृत्य किया। यहां के जज कारस्टीफन साहिब भी, श्री स्वामी जी महाराज के उपदेशों में आते, और उनसे प्रेमभरी वार्त्तालाप करते रहे।

श्री स्वामी जी महाराज वैदिक विचारों का जो बीज बो गये थे उसके पुण्य परिणाम में

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर १९३२

चित्र सभासद आर्य्यसमाज लुधियाना सन् १८९२ ई०

बैठे हुए फर्श पर बांई तरफ से-

१) ला० लभ्भराम जी नय्यर-उपमन्त्री २) ला० अच्छरू रामजी (३) ला० उमरावसिंह जी-मन्त्री ४) ला०लाजपतराय जी थापर (५) ला० राम नारायण जी

कुरसी पर बैठे हुए बांई तरफ से

(१) ला० गणेशीलाल जी (२) ला० रामजीदास जी उपप्रधान (३) ला० राम रतन जी-प्रधान (४) बा० पोलोराम जी महेन्द्र (५) बा० दुर्गादत्त जी वकील

कुरसी वालों से ऊपर खड़े हुए पहिली पंक्ति में -

(१) ला० मिलखी राम जी (२) ला० आत्मा राम जी (३) ला० मनसा राम जी थापर (४) ला० हीरा लाल जी वर्म्मा प० जानी राम जी अध्यापक (६) ला० कृपाराम जी सूद (७) ला० अनन्त राम जी

खड़े हुए सब से ऊपर की पंक्ति में बांई तरफ से-

ला० आत्मा राम जी लम्बा, ला० शंकर दास जी, ला० आत्माराम जी, मा० भानाराम जी, ला० रघुनाथ दास जी लम्बा, ला० मनसा राम वकील चौधरी तुलसीराम वकील, ला० नानक चन्द सूद, चौ० गोपी राम थापर।

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर ११३२
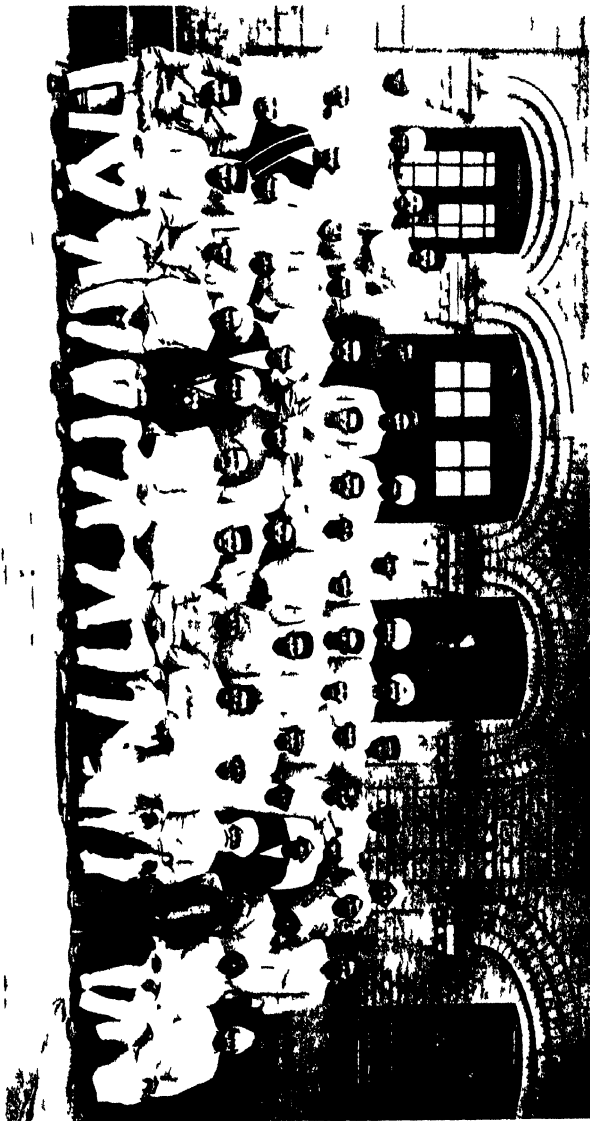
आर्य्य समाज लुधियाना के सदस्य

कुरसी पर बैठे हुए बाईं तरफ़ से डा० बख्तावर सिंह जी प्रधान

२६ अक्टूबर सन् १८८२ को आर्य्य समाज लुधियाना की स्थापना हुई।

यह आर्य्यसमाज श्री ला० रामजीदास जी खज़ांची, बा० शिवसरनदास जी ठेकेदार, ला० लाजपतराय थापर, बा० उमाप्रशाद् जी, ला० तुलसीराम जी वकील, ला० केदारनाथ थापर आदि सज्जनों के उद्योग से स्थापित हुआ। उस समय निम्नलिखित महानुभाव समाज के अधिकारी और प्रतिष्ठित सभासद् हुए—

(१) बा० शिवसरनदास जी प्रधान।
(२) श्री ला० रामजीदास जी साहिब उपप्रधान व कोषाध्यक्ष।
(३) पं० सालिगराम जी वकील मन्त्री।
(४) बा० उमाप्रशाद् साहिब अहलकार उपमन्त्री।
(५) चौ० तुलसीराम साहिब वकील।
(६) ला० आत्माराम साहिब नाज़िर।
(७) मा० रज्जुलाल साहिब।
(८) ला० गौरीदत्त जी।
(९) पं० नारायणदास जी।
(१०) ला० लाजपतराय जी।
(११) ला० केदारनाथ थापर।

सब से पहिला साप्ताहिक सत्संग

२६ अक्टूबर सन् १८८२ प्रातःकाल ७॥ बजे कटरा-नौहरियां में एक छोटे से चौबारे में हुआ। इस समाज का सबसे पहिला वार्षिकोत्सव ६ अक्टूबर सन् १८८३ को श्री ला० रामजीदास जी खज़ांची के चौड़ा बाज़ार वाले मकान में हुआ। उस समय कौन जानता था कि यह छोटा सा समूह ऋषि दयानन्द के तपोबल और अपने पुरुषार्थ से इतनी उन्नति करेगा कि किसी समय नगर में एक भारी शक्ति का केन्द्र सिद्ध होगा, और न केवल नगर व आस पास के संख्यातीत नरनारियों की त्रिविध उन्नति और जीवन सुधार का कारण होगा अपितु सहस्रों बालक और बालिकाओं के जीवन को शिक्षा द्वारा उच्च बनाने में भी सहायक होगा।

आर्य्य समाज लुधियाना का प्रारम्भिक काल

आरम्भ में आर्य्यसमाज लुधियाना ने अपने मुख्योद्देश्य वेद प्रचार के लिये जो साधन स्वीकार किये वह निम्नलिखित थेः—

१. प्रतिदिन सायंकाल को वेद भाष्य की कथा की जाती थी।
२. रविवार के साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त प्रत्येक शुक्रवार को दो घंटे के लिये धर्मचर्चा

होती थी जिसमें सबको शंका समाधान करने के लिये स्वतन्त्रता थी।

३. प्रत्येक बुधवार को नगर के भिन्न २ मुहल्लों में वैदिक धर्म का प्रचार किया जाता था।

४. अधिकारी जन संस्कृत तथा आर्य्य भाषा की उन्नति के लिये पूर्ण उद्योग करते थे।

५. अन्तरंग सभा में भिन्न २ समुदायों के प्रतिनिधि लिये जाते थे।

६. सभासदों की उपस्थिति की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। जिस सभासद् की अनुपस्थितियां अधिक होती थीं उसका समाज से बहिष्कार कर दिया जाता था अथवा उसको इसके लिये उत्तर देना पड़ता था।

आर्य्य समाज का आटा फण्ड

उस समय के कर्म्मचारियों के पुरुषार्थ और काम करने की शैली को मालूम करके उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है कि किस तरह मान अपमान के तुच्छ भावों को त्यागकर समाज के व्यय को चलाने के लिये वह घर २ से आटा मांग कर लाते रहे। इसका नाम उन्होंने आटाफण्ड रखा हुआ था। इस फण्ड से आर्य्य समाज लुधियाना को १०) मासिक आमदनी होती थी जो उस समय के अनुसार पर्य्याप्त आमदनी थी।

आर्य्य समाज मन्दिर

आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार प्रारम्भ में आर्य्यसमाज को साप्ताहिक सत्संग के लिये नगर के भिन्न २ भागों में स्थान परिवर्तन करना पड़ा। किन्तु जब सन् १८८६ में पुराने हिन्दु स्कूल को अपने अधिकार में कर लिया तो आर्य्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन भी उसी स्थान पर होने लगे। प्रारम्भ से ही संचालकों के हृदय में समाज का अपना मन्दिर बनाने की उत्कट इच्छा थी। मिशन स्कूल के सामने एक भूमि भी खरीदी गई। परन्तु कई कारणों से उसे बेच देना पड़ा। तत्पश्चात् समाज के साप्ताहिक सत्संग पुरानी कोतवाली के सामने वाले स्थान में होते रहे। सौभाग्य से १६ अप्रैल सन् १६०६ को नगर के मध्यभाग तालाव बाज़ार में ५०००) में मन्दिर के लिये पर्य्याप्त स्थान मिल गया। जहां अब आर्य्यसमाज का विशाल भवन स्थित है। इस के अन्दर के कमरे व चौवारे आवश्यकतानुसार समय समय पर तय्यार होते रहे परन्तु इस समय जो विशाल मुख्यद्वार व डयोढ़ी आप देख रहे हैं वह इस समाज के कार्य्यकर्त्ता श्री ला० लब्भूराम जी नय्यड़ के अनथक परिश्रम का परिणाम है। जिसका उद्घाटन श्री महात्मा मुन्शीराम जी के करकमलों द्वारा हुआ। यह ३००००) के लगभग का विशाल मन्दिर आर्य्य समाज की स्वामिनी सभा श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के नाम रजिस्टर्ड है।

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर १९३२

आर्य्य समाज मन्दिर लुधियाना सन् १९१६ को निर्मित

ऊपर चौबारे में खड़े हुए ला० लब्भु राम नय्यर

शुद्धि का काम

आजकल तो शुद्धि का कार्य्य बड़ा साधारण सा काम समझा जाता है परन्तु आरम्भ में शुद्धि के लिये बड़े विरोध का सामना करना पड़ता था। आर्य्यपुरुषों के घरों में क्लेश होता बिरादरियों में घोर विरोध होता, न केवल बिरादरियों का आपस का वर्त्ताव बन्द होता बल्कि रिश्ते नाते तक टूट जाया करते थे। आर्य्यसमाज लुधियाना ने सबसे प्रथम रामलाल को शुद्ध किया जो मुसलमान होगया था। इस शुद्धि के लिये स्थानीय सूद बिरादरी में बड़ी देर तक मुखालफ़त होती रही। परन्तु इस विरोध के होते हुए भी आर्य्यसमाज ने शुद्धि के कार्य्य को ज़ोर से जारी रखा।

रहतिया जाति, जो इस ज़िले के ग्रामों में बहुसंख्या में कपड़े बुनने का कार्य्य करती है। इनको शुद्ध करने में आर्य्यसमाज को अपनी पर्य्याप्त शक्ति लगानी पड़ी। इन लोगों को ग्रामों में कूओं पर चढ़ने नहीं दिया जाता था और इस रुकावट को दूर करना बड़ा आवश्यक था। इसके लिये आर्य्यसमाज को बड़े २ कष्ट उठाने पड़े। मुकद्दमे तक हुए और कई वार ग्रामों में वहां के लोगों के सामने इनके घरों की पकी हुई कच्ची रोटी खाकर इनके साथ अपनी समानता के व्यवहार का प्रमाण देना पड़ा। लुधियाना नगर में भी जब जब यह पता लगा कि कोई हलवाई इनको अपनी दुकान पर चढ़ने नहीं देता वहां वहां आर्य्यपुरुष पहुंच कर उनके विरोध को दूर करते रहे। अन्त में आर्य्यसमाज लुधियाना को इस कार्य्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। और अब इस ज़िले में पर्य्याप्त संख्या में शुद्ध हुए रहतिये भाई वर्त्तमान हैं और इनमे से कइयों की योग्यसन्तानों के विवाह सम्बन्ध भी उच्च कहलाने वाली जातियों में होचुके है और ऐसे कई परिवार सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त आर्यसमाज ने कई नौजवानों को जो ईसाइयों के पञ्जे में जा फंसे थे धन खर्च करके और तरह २ के लगातार कष्ट सहकर बड़े परिश्रम से बचाया और बहुसंख्यक मुसलमानों व ईसाइयों को भी समय २ पर शुद्ध करके वैदिकधर्मी बनाया।

बांगरू भाइयों का जाति प्रवेश, आर्यसमाज लुधियाना ने १४-६-२३ को आर्यसमाज मन्दिर में ६३ बांगरू भाइयों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया। इनकी सन्तान को सुशिक्षित करने के लिये सन् १९२३ में इनके मुहल्ले में एक पाठशाला भी स्थापित की जो बड़ा अच्छा काम करती रही। इनके दो बालक विद्यासागर और विद्यारत्न आर्यसमाज द्वारा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रदान की हुई छात्रवृत्ति पर देहली की आर्यपाठशाला में संस्कृत अध्ययन करते रहे। कुछ समय पीछे आर्यसमाज लुधियाना ने उनको संस्कृत मोगा कालिज में प्रविष्ट करवाया। पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इनमें से विद्यासागर अच्छे नंबरों के साथ प्राज्ञ परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ और विद्यारत्न बीमारी के कारण परीक्षा में सम्मिलित नहीं होसका नहीं तो उसके उत्तीर्ण होने में भी कोई सन्देह नहीं था। अब इनकी कुछ कन्यायें "आर्य कन्या पाठशाला" में और इनके बालक "आर्य हाई स्कूल" में शिक्षा ग्रहण करते है।

कुछ और दलित जाति के लोग जो रोहतक के आस पास रहने वाले हैं यहां रामबाग के पास रहते हैं इनको भी आर्यसमाज लुधियाना ने शुद्ध करके आर्यसमाज में प्रविष्ट किया । आर्य समाज ने इनके यहां भी पाठशाला स्थापित की थी, जो कुछ समय तक उनमें अच्छा कार्य करती रही। इन भाइयों ने कई वार अपने स्थान पर आर्यपुरुषों को प्रीति भोज दिया और कई वैदिक संस्कार कराये हैं। इन लोगों ने अपनी आबादी का नाम 'दयानन्द गढ़' रख लिया है। ये बड़े प्रेम से समाज के साप्ताहिक सत्संगों में सम्मिलित होते रहते हैं और आर्यसमाज के वार्षिकोत्सवों में और संकीर्त्तनों में सम्मिलित होकर अपने भजनों द्वारा उत्सवों की शोभा को बढ़ाते हैं । हमारे पुरुषार्थी सभासद् श्रीयुत अमीरचन्द जी वानप्रस्थी इन लोगों में बड़ी लगन से प्रचार का काम करते हैं उनका यह काम अति सराहनीय है।

इन ५० वर्षों में आर्यसमाज ने सहस्रों शुद्धियें की है उसका परिणाम यह हुआ कि शुद्धि एक साधारण बात होगई है। यहां तक कि जो लोग शुद्धि के विरोधी थे वह स्वयं ही शुद्धि करने लग पड़े हैं।

प्रचार और शास्त्रार्थ

इस समय तो सामाजिकयुगमें काफ़ी परिवर्तन तथा आर्य्यसमाज के लिये कार्य्यक्षेत्र साफ़ हो चुका है और आर्य्यसिद्धान्तों को हिन्दू जाति ने अपना लिया है । परन्तु आजसे कुछ समय पूर्व वह समय भी था जब आर्य्यसमाज लुधियाना को अपने सनातन धर्मी भाइयों के साथ कभी मूर्तिपूजा पर, कभी शुद्धि पर कभी श्राद्ध व अन्य विषयों पर बड़े शास्त्रार्थ करने पड़े थे। इन शास्त्रार्थों द्वारा प्रचार में बड़ी सफलता हुई। इस समाज ने कभी भी कोई ऐसा अवसर हाथ से जाने नहीं दिया जबकि अपने उत्सवों में विपक्षियों के व्याख्यानों के उत्तर में शास्त्रार्थ के लिये चैलेञ्ज निमन्त्रण) न दिया हो । उस समय जब श्री शंकराचार्य्य जी महाराज ने अपनी मण्डली और बड़ी सजधज के साथ नगर में प्रवेश किया, सनातनधर्म्म के प्रसिद्ध व्याख्याता पं० दीनदयाल व पं० गोपीनाथ आदि भी उनके साथ आए तो इस समाज ने उनको भी शास्त्रार्थ के लिये ललकारा। उस समय नगर के बाज़ारों और कूचों में आर्य्यसमाज के चैलेञ्ज और बड़े २ पोस्टरों ने नगर में एक हलचल पैदा करदी। यहां तक कि श्री शंकराचार्य्य जी शास्त्रार्थ का साहस न करके लुधियाना से ही चले गये। जनता पर इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा । एक और बड़े धडल्ले का शास्त्रार्थ घाट लाला शिवदयाल पर सनातन धर्म्मी पं० जगत्प्रसाद और आर्य्यसमाज की ओर से श्री पं० गणपति शर्म्मा में श्राद्ध विषय पर सर्दार मानसिंह बार-एट-ला० के सभापतित्व में हुआ। इस शास्त्रार्थ का प्रभाव भी बड़ा अच्छा पड़ा। यहांतक कि ईसाइयों के स्थानीय समाचार पत्र 'नूर अफशा' ने अपने कालमों में आर्य्यसमाज की विजय की ही प्रशंसा की । समाज को जब कभी भी शास्त्रार्थ सहायतार्थ आवश्यकता पड़ती थी तब ला० मुन्शीराम जी (श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी), श्री पं० आर्यमुनि जी, श्री पं० गणपति शर्म्मा जी तथा श्री स्वामी दर्शनानन्द जी आ

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर ११३२
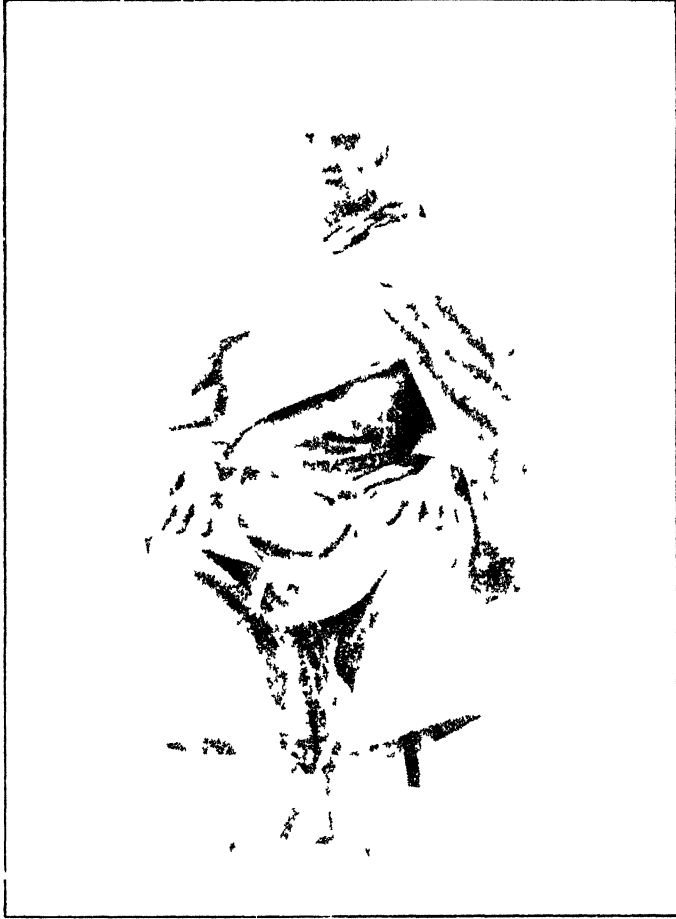
अमर शहीद धर्मवीर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

जाते थे। इस समाज ने न केवल लुधियाना ही में बल्कि रायकोट, जगरांओं, माछीवाड़ा, फिल्लौर, आदि आसपास के स्थानों में कई शास्त्रार्थ कराए और उनमें पूर्ण सफलता प्राप्त की। इस तरह से यह आर्यसमाज प्रचार का काम अपनी भरसक शक्ति के साथ करता रहा है। ऐसा भी एक समय था जब कि पंजाब भर में केवल ४, ५ समाजों के उत्सव और वह भी नियत समय पर हुवा करते थे और सैंकड़ों की संख्या में आर्य्य पुरुष इन उत्सवों में सम्मिलित हुआ करते थे। इस प्रकार लुधियाना समाज के वार्षिकोत्सवों पर बाहर से बहुसंख्या में आर्य्य पुरुष पधारा करते थे। उस समय सामाजिक भाइयों का आपस में मिलकर संकीर्त्तन व एकही स्थान पर मिलकर सहभोज करना और धर्म्म चर्चा व नमस्ते शब्द की प्रेमभरी गूंज एक विचित्र वायु मण्डल पैदा कर देती थी। उत्सवों पर धन भी पर्य्याप्त आजाता था और उन दिनों नगर में आर्य्यसमाज की चर्चा रहती थी। उत्सवों पर शंका समाधान भी हुवा करता था। एक वार इस समाज के वार्षिकोत्सव पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध कवि महता अमीचन्द जी सम्मिलित हुये। उत्सव की कार्य-वाही के अनन्तर भोजन आदि से निवृत्त हो कर महता जी नगर मे दुकान २ पर चक्कर लगा कर उत्सव के सम्बन्ध में लोगों की सम्मति और जो चर्चा होती थी उसे वह अपनी पाकेट बुक में नोट कर के गायन द्वारा उत्सव में सुनाया करते थे। सार यह कि इस समाज को सदैव यह गौरव रहा है कि जब कभी खण्डन की आवश्यकता हुई और किसी भी पन्थ व संप्रदाय की वास्तविकता प्रकट करना आवश्यक समझा गया तब २ इस समाज ने निःसंकोच होकर निर्भयता से काम किया। एक वार अपने बलिदान से ३, ४ मास पूर्व हमारे वार्षिकोत्सव पर श्री पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर सम्मिलित हुवे। इस उत्सव पर बाहर से आर्यसमाज के गिने चुने प्रसिद्ध आर्य महानुभाव भी पधारे थे। लुधियाना में यह पहिला ही अवसर था कि श्री पं० लेखराम जी ने इस्लाम के खंडन पर समाज द्वारा एक खुला व्याख्यान देने की घोषणा की थी। व्याख्यान से १५, २० मिनट पहले श्री पं० लेखराम जी के पेट में ऐसा सख्त दर्द उठा जिससे उनको उत्सव मंडप छोड़ना पड़ा। उस समय कई डाक्टर पं० लेखराम जी की चिकित्सार्थ पहुंचे। उस समय उनको दर्द से इतना बेचैन देखकर बड़ा आश्चर्य होता था कि ऐसे धीर और वीर पुरुष दर्द से इतना व्याकुल क्यों हो रहे हैं। परंतु पता चला कि इस बेचैनी का कारण केवल दर्द ही नहीं था परंतु उन्हें यह खयाल बेचैन किये हुवे था कि जो मुसलमान व्याख्यान सुनने के लिये आए हैं वह सब निराश होकर लौट जावेंगे। उन्होंने डाक्टरों से यही निवेदन किया कि वह शीघ्र ही उन्हें समय पर व्याख्यान देने के योग्य करदें। और डाक्टरों ने इन्जैक्शन द्वारा इस योग्य करदिया कि वह खड़े होकर व्याख्यान दे सकें। उनका वह व्याख्यान आर्यसमाज के इतिहास में चिरस्थायी रहेगा। व्याख्यान क्या था शेर की गर्जना थी। ज़िले में भी समय २ पर प्रचार का विशेष प्रवन्ध किया जाता था। जहां भी किसी आर्यसमाज व सामाजिक पुरुष को सहायता की आवश्यकता पड़ती थी, जिस ग्राम में जहां कहीं ईसाइयों ने प्रचार द्वारा लोगों पर अपना प्रभाव डाल लिया था वहां पर कईवार आर्यसमाज को डट कर मुकाबला करना पड़ा।

मेलों और विशेष उत्सवों पर प्रचार

मेलों और उत्सवों पर भी प्रचार का प्रबन्ध किया जाता रहा। घाट शिवदयाल पर मेला वसन्त में, छपार में मेला छपार पर, मेला रोशनी व रामलीला पर मेले के स्थानों पर और भाई-वाले आदि मेलों पर भी आर्यसमाजकी ओर से प्रचार का प्रबन्ध होता रहा। प्रारम्भ (सन् १८६०) में और उसके कई वर्ष पश्चात् भी होली त्यौहार पर आर्यपुरुष उजले वस्त्र पहिनकर, मिलकर जलूस निकालते और प्रभुकीर्तन करते हुवे बाज़ारों में से गुज़रते थे। वह दृश्य भी कैसा विचित्र होगा, जब कि एक तरफ़ नगरनिवासी होली के त्यौहार में मस्त होकर कीचड़ और धूल उछालते थे और दूसरी तरफ़ आर्यसभासद् प्रभुयश गायन करते हुवे आर्यसमाज का सन्देश नगर निवासियों तक पहुंचाते हुवे इस त्यौहार को मनाया करते थे।

इसके अतिरिक्त यह समाज विशेष अवसरों पर ट्रैक्टों और पेम्फलैटों द्वारा भी वैदिक धर्म्म का प्रचार करता रहा है।

कथा द्वारा वैदिक धर्म्म का प्रचार

आर्यसमाज में प्रायः व्याख्यान द्वारा ही प्रचार करने की शैली है, किन्तु अनुभव से सिद्ध हुआ है कि जनता में कथाओं द्वारा किया हुआ प्रचार प्रभावोत्पादक तथा चिरस्थायी होता है। इसी भाव से इस समाज के अधिकारी इस साधन को भी प्रयोग में लाते रहे हैं। लुधियाना नगर और समाज का सौभाग्य है कि निरन्तर कई वर्षों से आर्यसमाज के प्रसिद्ध मधुरभाषी पूज्यपाद श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज प्रतिवर्ष लगभग १०, १२ दिन कथा द्वाराअमृत वर्षा कर रहे हैं। लुधियाना की जनता कथा के दिनों की प्रतीक्षा में रहती है। इन कथाओं से नगर के हज़ारों नर-नारी लाभ उठाते तथा अपने जीवन को उच्च बनाते हैं। उन कथाओं का यह भी प्रभाव है कि नगर निवासी आर्यसमाज और उसके कामों को बड़ी श्रद्धा से देखने लगे हैं। यह नगर और समाज श्री स्वामी जी महाराज का, उनके ज्ञान दान के लिये ऋणी है। पूज्यपाद श्री स्वामी गंगागिरी जी महाराज आचार्य गुरुकुल रायकोट भी अपनी उपनिषदों की विद्वत्ता पूर्ण और सरल कथा से नगर के नरनारियों को लाभ पहुंचाते रहे हैं। आर्यसमाज उनका भी कृतज्ञ है।

आर्य्यसमाज का विद्वन्मण्डल

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और उससे सम्बन्धित संस्थाओं तथा आर्यजगत् में कौन ऐसा प्रसिद्ध नेता, संन्यासी तथा उपदेशक होगा जिन के व्याख्यान से इस समाज ने नगर निवासियों को लाभ न पहुंचाया हो। श्री स्वामी दर्शनानन्द जी, श्री वज़ीरचन्द जी विद्यार्थी, धर्म्म-वीर पं० लेखराम जी, श्री मा० आत्माराम जी, श्री स्वामी ईश्वरानन्द जी, श्री स्वामी आत्मानन्दजी

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर ११३२

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

स्वामी योगेन्द्रपाल जी, श्री स्वामी नित्यानन्द जी, श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी, श्री पं० गणपति शर्म्मा जी, श्री पं० पूर्णानन्द जी, श्री पं० शिवशंकर जी काव्य तीर्थ, श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, श्रद्धेय अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री नारायण स्वामी जी महाराज, श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, मा० मिलखीराम जी श्री स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज, श्री प्रो० रामदेवजी, श्रीइन्द्रजी, श्री म० कृष्ण जी सम्पादक 'प्रकाश' तथा अन्यान्य प्रसिद्ध महानुभाव (जिनके नाम विस्तार भय से नहीं लिखे जासके) इस आर्य समाज के उत्सवों तथा विशेष अवसरों पर अपने विद्वत्तापूर्ण उपदेशों से यहां की जनता को लाभ पहुंचाते रहे हैं।

प्रीतिभोजन या सहभोज

इस समाज के कार्यकर्त्ताओं ने जहां प्रचार के लिये प्रत्येक उचित साधन से काम लिया वहां परस्पर प्रेम और प्रीति बढ़ाने के लिये कभी २ प्रीति भोजन भी होते रहे हैं। ऐसे सहभोज प्रायः कभी होली कभी दिवाली कभी रक्षाबन्धन, कभी ऋतुपरिवर्तन तथा कभी किसी विशेष अवसर पर हुआ करते थे। उदाहरणार्थः—

जुलाई सन् १८६० के एक प्रीतिभोज का उस समय की रिपोर्ट में निम्न वर्णन अंकित है— "सब आर्य्य सभा सद और सहायक इकट्ठे हुए। २ बजे सायंकाल तक बाग़ ला० गंगाबिशन में भजन और धर्म्म चर्चा होती रही। बाग़ के दरम्यान का तालाब लबालब भरवा दिया गया था। आर्य्य पुरुषों ने वहीं स्नान और संध्या की और फिर प्रीति भोजन हुआ"। इस तरह के सहभोज कभी २ विशेष २ त्यौहारों के अवसर पर सभासदों के घरों पर भी किए जाते थे। परन्तु ग्रीष्म ऋतु में बहुत देर तक यह सहभोज बाग़ ला० गंगाबिशन में ही होते रहे। इसके अतिरिक्त कभी किसी आर्य्य भाई की विदाई के समय तथा कभी दलित भाइयों से मिल कर कभी वसन्त आदि त्यौहारों पर आर्य्य सभासदों के अब भी सहभोज होते हैं।

विधवा विवाह सम्बन्धी काम

सन् १६८६ में बाबू देवीचन्द जी जालन्धर निवासी के उद्योग से कुछ आर्य्य पुरुषों ने मिल कर यहां एक विधवा विवाह सभा जारी की जो सन्तोष जनक कार्य्य करती रही मगर ला० देवीचन्द जी के यहां से बदल जाने पर यह सभा टूट गई। परंतु आर्य्यसमाज लुधियाना ने विधवा विवाह के कार्य्य को नियम पूर्वक जारी रखा।

स्त्री आर्य्यसमाज

८ जून सन् १८६० में यहां स्त्री आर्य्यसमाज स्थापित हुआ। प्रारम्भ काल से ही स्त्रियों का प्रचार कार्य्य में विशेष भाग रहा है। प्रत्येक वर्ष नौघरा में तीजों के त्यौहार पर स्त्री समाज की ओर से प्रचार होता रहा है। अनाथालय फिरोज़पुर व कन्यामहाविद्यालय जालन्धर से भी देवियों और कन्याओं को बुला कर प्रचार करवाया जाता रहा है। आर्य्य समाज के वार्षिकोत्सवों के साथ २ ही इस स्त्री समाज के वार्षिकोत्सव भी होते हैं।

इस स्त्री समाज की कार्य्यकर्त्री निम्न लिखित देवियां रही हैं। धर्मपत्नी ला० देवीचन्द जी, श्रीमती ज्ञानवती जी धर्मपत्नी श्री राय बैजनाथ साहिब इञ्जिनीयर, श्रीमती सुमंगली देवी जी धर्मपत्नी श्री डा० चिरञ्जीव भारद्वाज, बीबी पार्वती देवी जी धर्मपत्नी पं० नौरंगराय जी, बीबी वेदकुमारी जी सुपुत्री श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, धर्मपत्नी रायसाहिब ला० शिवप्रसाद जी तथा अन्य कई देवियां (विस्तार भय से जिनके नाम नहीं लिखे जासके) भी काम करती रही हैं।

अब इस समय स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती मोहन देवी जी और मन्त्राणी श्रीमती पूरण देवी जी हैं। स्त्री समाज के साप्ताहिक अधिवेशन प्रत्येक मंगलवार को समाज मन्दिर में नियम पूर्वक होते हैं।

नगर आर्य कुमार सभा

इस नगर के बालकों और विद्यार्थियों में धर्म प्रचारार्थ नगर कुमार सभा के नाम से इस नगर में बड़ी देर से एक कुमार सभा स्थापित है। आरम्भ में श्री ला० रामजोदास जी खज़ांची कुमार सभा के साप्ताहिक अधिवेशनों में सम्मिलित होकर और अपने व्याख्यानों द्वारा कुमारों के उत्साह को बढ़ाते रहे। यह कुमार सभा अपने वार्षिकोत्सव भी बड़े उत्साह से मनाती चली आई है। आजकल इस कुमार सभा के प्रधान पं० प्यारेलाल जी जोशी और मन्त्री म० ख़िदमतराम जी हैं। इस सभा के साप्ताहिक अधिवेशन प्रत्येक वृहस्पति वार को होते हैं।

बोर्डिंग आर्य कुमार सभा

इस कठिनता का अनुभव करके कि आर्य्य बोर्डिंग के छात्रों को दूरी और समय के विचार से नगर कुमार सभा में सम्मिलित होना कठिन है बोर्डिंग में 'बोर्डिंग आर्य्य कुमार सभा' जारी की हुई है। इस सभा के साप्ताहिक अधिवेशन भी प्रत्येक वृहस्पति वार को होते हैं। जिस में विद्यार्थी बड़े उत्साह से कार्य करते हैं। कभी २ इसमें अन्य व्याख्यातावों के व्याख्यान भी होते हैं। इस कुमार सभा ने अपना वार्षिकोत्सव भी बड़े समारोह के साथ मनाया है। इस समय इस सभा के वर्तमान प्रधान म० हंसराज जी तथा मन्त्री म० तेलूराम जी हैं। इस तरह से यहां दो आर्य कुमार सभाएं हैं।

चौड़ावाज़ार आर्य्यसमाज

आर्य्यसमाज लुधियाना के कुछ सभासदों ने अलग होकर सितम्बर सन् १९२५ में यहां चौड़ा वाज़ार आर्य्यसमाज के नाम से घास मण्डो में एक अलग आर्य्यसमाज स्थापित किया है। यह समाज भी श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आधीन है।

लुधियाना समाज के स्थानीय प्रचारक

लुधियाना समाज को इस बात का गौरव है कि यहां के निम्नलिखित आर्य्य सज्जन समय २ पर शहर में तथा आसपास के ग्रामों और नगरों के उत्सवों पर भी समाज की तरफ से अथवा श्रीमति आर्य्यप्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार प्रचारार्थ जाते रहते हैं।

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर १९३२

आर्य्य बोर्डिंग हाउस के छात्र यज्ञशाला में सन्ध्या कर रहे हैं
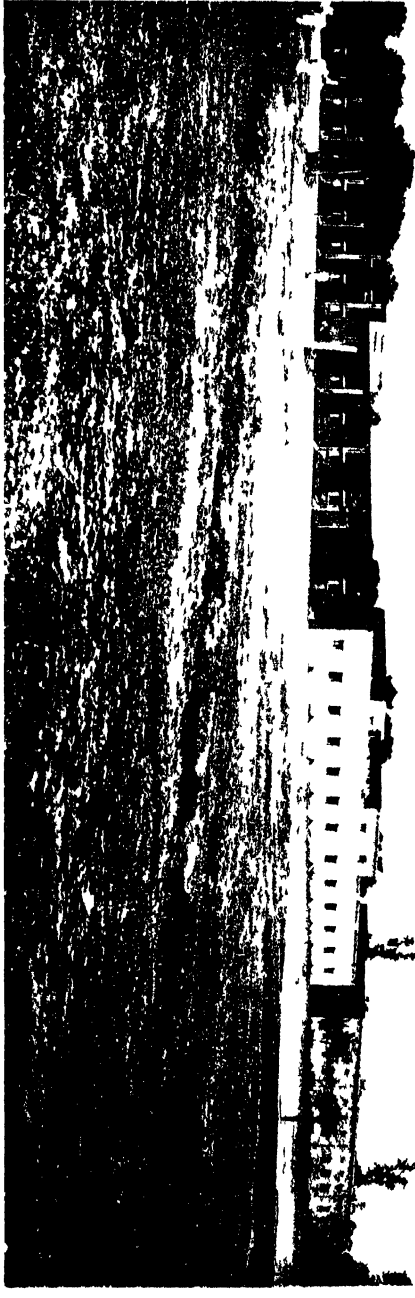
आर्य्य हाई स्कूल बोर्डिंग हाउस (छात्रावास) का पिछला भाग

(१) श्री मा. रामलाल जी बी. ए. हैडमास्टर आ हा. स्कूल लुधियाना

(२) श्री पं० गुज्जरमल जी

(३) श्री पं० हरदयालु जी शास्त्री

(४) श्री मा० यशपाल जी बी. ए.

(५) श्री प० अर्जुनदेव जी शास्त्री

(६) श्री पं० विष्णुमित्र जी स्नातक

(७) श्री पं० सत्यदेव जी स्नातक

इनके अतिरिक्त कुछ और सज्जन भी प्रचार कार्य्य में सहायता देते रहते हैं। केवल वर्तमान समय में ही नहीं परन्तु आर्य्य समाज के आरम्भिक काल में भी श्री पं० जातीराम जी, श्रीयुत ला. देवीचन्द जी, पं० विहारी लाल जी अध्यापक आ. हा. स्कूल जहां प्रचार करते रहे वहां कुछ वर्ष पं० गोपालदत्त जी उपदेशक, व पं० मथुरादास जी भजनीक को भी नगर और ज़िला प्रचार के लिये नियत किया था। और कुछ काल तक श्री पं० नरोत्तमदत्त जी उपदेशक आ. प्र. नि. स. पंजाब भी इस समाज में पुरोहित का कार्य्य करते रहे हैं। लुधियाना समाज को इस बात का भी गौरव है कि आरम्भ से अबतक समाज की तरफ़ से बड़ी दूर २ तक योग्य पण्डित संस्कारों के लिये भी जाते रहते हैं।

सामाजिक फण्डों की सहायता

गुरुकुल कांगड़ी, कन्या महाविद्यालय जालन्धर, दयानन्दउपदेशकविद्यालय, वेद प्रचार फण्ड, अनाथालय फिरोज़पुर, डी. ए. वी. कालिज लाहौर, दयानन्द दलितोद्धार तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं को भी दान भेजने में यह समाज पंजाब की किसी भी समाज से पीछे नहीं है और यथा शक्ति उनकी सहायता करता रहा है।

डी. ए. वी. कालिज के खुलने के बाद इस समाज द्वारा सन् १८८८ में कालिज को ७०००) की सहायता दी गई।

गुरुकुल कांगड़ी की सहायता का भी इस समाज को श्रेय है कि इस समाज के सभासद श्री ला० लब्भुराम जी नैयड़ ने अपने पुरुषार्थ से लगभग डेढ़लाख रुपया एकत्र करके गुरुकुल कोष में पहुंचाया है। इस राशी में दो छात्र वृत्तियां और ३००००) वह भी सम्मिलित है जो उन्होंने 'श्रद्धानन्द चेयर' के लिये एकत्र करके दिया था। इस उपलक्ष्य में गुरुकुल की तरफ़ से उनको पदक भी दिये जाचुके हैं। गुरुकुल के इतिहास में रुपया जमा करने वालों में श्री ला० लब्भुराम जी का नाम चिरस्थायी रहेगा। उपर्युक्त फण्डों के अतिरिक्त अन्य सामाजिक फण्डों को भी आवश्यकतानुसार यह समाज यथाशक्ति सहायता प्रदान करती रही है जिसके वर्णन की विशेष आवश्यकता नहीं।

वेद प्रचार फण्ड

आरम्भ काल से ही यह समाज आ. प्रतिनिधि सभा को वेद प्रचार के लिये सभा द्वारा नियत हुआ धन नियमपूर्वक देती रही है। पंजाब में समाज के जब दो विभाग नहीं हुवे थे २६-३-८७ का सभा की

ओर से उर्दू में लिखा एक पत्र समाज के कार्यालय में अब भी मौजूद है जिसमें मन्त्री आ. स. लुधियाना को सम्बोधन में करते हुये लिखा है कि "सभा ने उपदेशक रखना मन्जूर किया है और पंजाब की समाजों के नाम दर्जावार धन लगाया है यानि अव्वल दर्जा समाज को २५), दोयम दर्जा १५), सोयम (३ दर्जा) १०) । आपकी लुधियाना समाज पंजाब की अव्वल समाजों में गिनी गई है इसलिये आप अपने हिस्से के २५) भेज दीजिये" यह पत्र अन्तरंग सभा में पेश होकर स्वीकृत होकर सभा का लिखा धन सभा को भेज दिया जाता है और हमारे लिये यह गौरव की बात है कि २५) से आरम्भ हुवा २ यह धन जब से सभा के साथ इस समाज का सम्बन्ध हुवा है अब ३००) वार्षिक तक पहुंच गया है इसके अतिरिक्त सभा को दशांश, लेखराम स्मारक निधि, दयानन्द दलितोद्धार सभा, ऋषि उत्सव इत्यादि फण्डों के लिये भी यथाशक्ति सहायता दी जाती है ।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में हमारे प्रतिनिधि

इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिये हमारे सभासदों में से ४ प्रतिनिधि निर्वाचित हैं।

(१) श्री रा. बा. ला. मक्खन लाल जी
(२) श्री डा. बख्तावरसिंह जी
(३) श्री मा. रामलाल जी
(४) श्री ला० लब्भूराम जी नय्यड़

इस समाज के लिये यह भी कम गौरव की बात नहीं है कि रा० ब० मक्खन लाल जी आ० प्र० नि० स० पं० के उपप्रधान हैं तथा अन्य दो प्रतिनिधि मा० रामलाल जी B. A. तथा ला० लब्भूराम जी नैयड आ० प्र० नि० स० पं० की अन्तरंग सभा के सदस्य हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा की शिक्षा समिति में समाज के प्रतिनिधि इस समाजकी ओर से पञ्जाब शिक्षा समिति में मा. रामलाल जी तथा ला० ऊधोराम जी अधिष्ठाता आर्य कन्या पाठशाला प्रतिनिधि हैं।

अनाथालय फिरोज़पुर छावनी

में इस समाज की ओर से ला. लब्भुराम जी नय्यड़ प्रतिनिधि हैं।

आर्य समाज की ओर से अन्य प्रकार की सहायता

(१) सन् १९०५ में जब कांगड़ा में भूकम्प आया उस समय इस समाज की ओर से सहायतार्थ डा० श्रीराम और भगत रघुपत राय जी भेजे गये थे जिन्होंने अत्यन्त सराहनीय कार्य किया। इस अवसर पर आर्य समाज ने धन से भी सहायता की।

(२) सन् १९१८ में जब इस नगर में इन्फ्लुएन्जा रोग का प्रकोप हुआ उस समय भी आर्य समाज लुधियाना की तरफ़ से नगर वासियों को सहायता दी गई। समाज मन्दिर में एक औषधालय खोला गया जहां धर्मार्थ औषधियां दी गईं। और आर्य स्वयंसेवक रोगियों के घरों पर भी जाकर दवाईयां पहुंचाते रहे तथा अन्य सहायता करते रहे।

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर ११३२
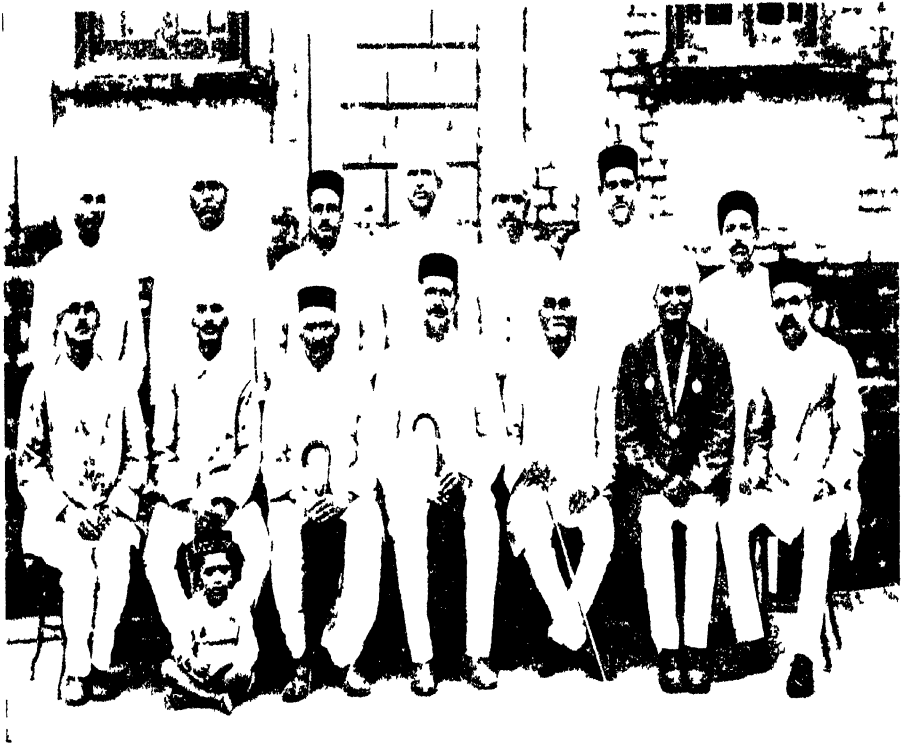
आर्य्य समाज लुधियाना के अन्तरंग सभा के सदस्य

कुरसी पर बैठे हुए बाईं तरफ से—

पं० कर्त्ता राम, ला० बाबूराम गुप्त, प० वंसाखी राम डा० बख्तावर सिंह (प्रधान), ला० मथुरा दास ला० लभ्भू राम नय्यर, ला० ऊधो राम

कुरसी से ऊपर खड़े हुए बाईं तरफ से—

मा० राम[१] लाल बी ए, ला० मंगलसेन[२] आनन्द, रा० सा० ला० शिवप्रशाद[३] पं० गुज्जरमल[४], मा० किशन[५] सिंह ला० अमीर[६] चन्द अग्रवाल, पं० विष्णु दत्त[७] ।

आर्य समाज लुधियाना के आधीन संस्थायें

इस समय आर्यसमाज लुधियाना के आधीन दो संस्थाएं हैं।

(१) आर्य हाई स्कूल लुधियाना

(२) गणेशीलाल आर्य कन्यापाठशाला लुधियाना

आर्यसमाज लुधियाना की अन्तरंग सभा इन दोनों संस्थाओं के प्रबन्ध के लिए अलग २ उप सभाएं (Sub Committees) निर्वाचित करती है। इस वर्ष सन् १९३२ में नीचे लिखी अन्तरंगसभा ने उपरोक्त संस्थाओं के प्रबन्धार्थ निम्न कमेटियां निर्वाचित की हैं :—

आर्य समाज लुधियाना की अन्तरंग सभा

प्रधान—श्री डा० बख्तावरसिंह जी

उपप्रधान—(१) श्री ला० मथुरादास जी अफ्रीका निवासी

(२) श्री पं० वैसाखी राम जी

मन्त्री—श्री ला० बाबूराम जी गुप्त

सहायक मन्त्री—श्री ला० ऊधोराम जी

उपमन्त्री—(१) श्री ला० अमीरचन्द जी अग्रवाल

(२) श्री पं० कर्त्तारामम जी

कोषाध्यक्ष—श्री ला० लब्भुराम जी नय्यड़

सहायक कोषाध्यक्ष—श्री पं० विष्णुदत्त जी स्नातक

पुस्तकाध्यक्ष—श्री पं० गुज्जरमल जी

प्रतिष्ठित सभासद:—

(१) रायसाहिब ला० शिव प्रसाद जी

(२) श्री मा० रामलाल जी

(३) श्री ला० मंगलसेन जी आनन्द

(४) श्री मा० किशनसिंह जी

आर्य्य हाईस्कूल उपसभा (कमेटी)

(१) रा० सा० ला० शिवप्रसाद जी मैनेजर

(२) ला० बाबूराम जी गुप्त खज़ांची

(३) रा० सा० ला० श्रीकृष्णदास जी M.S.C.

(४) मा० रामलाल जी B.A.

(५) ला० जगन्नाथ जी M.A.

(६) डा० गुज्जरमल जी

(७) ला० कुन्दनलाल जी M.A.

(८) ला० लब्भुराम जी नय्यड़

(६) ला० हंसराज जी ढण्डा B.A.

(१०) ला० मंगलसेन जी आनन्द

आर्य्य कन्या पाठशाला उपसभा (कमेटी)

(१) ला० ऊधोराम जी पैन्शनर मैनेजर

(२) ला० लब्भुराम जी नय्यड़ कोषाध्यक्ष

(३) रा० सा० ला० शिवप्रसाद जी

(४) मा० रामलाल जी B.A.

(५) पं० वैसाखीराम जी

(६) ला० मंगलसेन जी आनन्द

(७) ला० अमीरचन्द जी अग्रवाल

(८) बा० महाराजकृष्ण जी आद

(६) मा० श्रीकृष्ण जी

(१०) ला० मथुरादास जी अफ्रीका निवासी

(११) पं० कर्त्ताराम जी

(१२) ला० बाबूराम जी गुप्त

आर्य्य हाईस्कूल लुधियाना

लुधियाना नगर में पहले पहल श्री मुन्शी जमनाप्रशाद जी कायस्थ के हृदय में हिन्दु बालकों को सुशिक्षित करने के लिये किसी जातीय स्कूल खोलने का विचार उत्पन्न हुआ । उक्त मुन्शी जी यहां एक प्रतिष्ठित सरकारी ओहदेदार थे। उन्होंने अपने मकान के समीप 'हिन्दु स्कूल' के नाम से एक स्कूल खोल दिया । इस स्कूल में विद्यार्थी भी अच्छी संख्या में आने लगे । यद्यपि नगर निवासियों को तरफ़ से भी इस स्कूल की सहायता की जाती थी परन्तु स्कूल का अधिक बोझ मुन्शी जी के ही कन्धों पर था। मुन्शी जी के स्वर्गवासी होने के पश्चात् स्कूल का उत्तरदायित्व उन के सुपुत्र मुन्शी माधोस्वरूप के कन्धों पर पड़ा । वह भी अपने पूज्यपिता के पदचिन्हों पर चलते हुए यथाशक्ति स्कूल को चलाते रहे । परन्तु नगरनिवासियों की सहायता में शनैः २ कमी आने लगी। और उसके साथ ही विद्यार्थियों की संख्या में भी कमी होने लगी और स्कूल साधारण अवस्था में आगया। इस स्कूल के पुराने विद्यार्थी (जिनमें से कई एक अच्छे ओहदों पर पहुंच गये

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर १९३२

आर्य्य हाई स्कूल व गंगाशीलाल आर्य्य कन्या पाठशाला लुधियाना की प्रबन्ध कर्त्री सभाओं के सदस्य

कुर्सी पर बैठे हुए बाईं तरफ से

लाल बाल राम गुप्ता, ला० ऊधा राम, मा० राम लाल बी ए, रा० सा० शिव प्रशाद, डा० बख्तावर सिंह ला० कुन्दन लाल एम ए, ला० हंसराज हण्डा बी ए ला० अमीर चन्द अग्रवाल रायजादा महाराज कृष्ण आदि।

कुर्सी से ऊपर खड़े हुए बाईं तरफ से।

पं० कर्त्ता राम ला० मंगल सेन आनन्द, ला० मथुरा दास, प० वैसाखी राम, ला० जगन्नाथ कपूर एम ए ला० लब्भू राम नय्यर रा सा श्रीकृष्ण दास \| ৲.(मा० श्री कृष्ण।

थे) भी सहायता करते रहे। परन्तु यह सहायता भी देर तक न निभ सकी । परिणाम यह हुआ कि स्कूल की अवस्था बड़ी डांवाडोल होगई । सौभाग्य से मुन्शी माधोप्रसाद जी के ज्येष्ठ भ्राता मुन्शी विशन स्वरूप जी आर्य पुरुषों से काफ़ी मेल जोल रखते थे । और आर्यसमाज के उत्साही सभासद स्वर्गीय ला० लाजपतराय जी थापर जो इस स्कूल की सदैव सहायता किया करते थे वह इस प्रयत्न में रहते थे कि किसी तरह से इस स्कूल का प्रबन्ध आर्यसमाज के हाथ में आजावे। उन्होंने अपना यह प्रस्ताव २६ अप्रैल सन् १८८६ की अन्तरंग सभा में पेश किया और उसके परिणाम स्वरूप ३० मई सन् १८८६ की अन्तरंग सभा में (जिसकी कार्यवाही स्वर्गीय श्री लाला रामजीदास जी के हाथ की लिखी हुई है) स्कूल के लेने का फ़ैसला होगया।

नकल प्रस्ताव (नं० १०) ३० मई सन् १८८६

(१०) "अज़ जानिब ला० रामनारायण व ला० लाजपतराय मैम्बरान समाज यह तहरीक हुई कि 'हिन्दू स्कूल' के लेने की बाबत जल्दी फ़ैसला होना चाहिये । ज़्यादा देर करने में सूरत नुक़सान की है। बाद बहस के इत्तिफ़ाक़ राय से क़रार पाया कि स्कूल का समाज से ताल्लुक़ कर लिया जावे और एक पत्र बख़िदमत ला० माधोस्वरूप साहिब मैनेजर 'हिन्दू स्कूल' भेजकर इत्तिला दी जावे कि समाज ने स्कूल को अपने ताल्लुक़ में करने का फ़ैसला कर लिया है । अब इनको बाज़ाब्ता 'स्कूल' समाज के सुपुर्द कर देना चाहिये"।

उपरोक्त प्रस्ताव के अनुसार जब स्कूल का चार्ज लेलिया गया। तब आर्यसमाज की अन्तरंग सभा ने निम्नलिखित सज्जनों की उपसभा स्कूल के प्रबन्धार्थ नियत की।

(१) श्री ला० रामजीदास जी साहिब—प्रधान
(२) श्री ला० तुलसीराम जी वकील—उपप्रधान
(३) मुन्शी माधोस्वरूप साहिब—मन्त्री
(४) श्री ला० उमरावसिंह जी—सभासद

स्कूल का चार्ज लेते समय स्कूल में कुछ टूटी हुई बैञ्चं, मेज़ें व कुरसियां थीं। तीन या चार टीचरों का स्टाफ़ था और २५,३० विद्यार्थी थे। स्कूल की इमारत किराये पर पुरानी और बोसीदा थी। समाज के हाथ में प्रबन्ध आते ही श्री ला० उमराओसिंह जी और श्री ला० मुरलीधर जी सूद ने अवैतनिक अपना अमूल्य समय स्कूल के छात्रों की शिक्षा के लिये देना स्वीकार किया। अधिकारीगण पुराना बाज़ार मोहल्ला वकीलां में मकान लेकर स्कूल चलाते रहे । और फिर आवश्यकतानुसार मकान बदलना भी पड़ा। उस समय के स्कूल स्टाफ़ में से मा० नत्थासिंह जी हैड मास्टर और मा० भानाराम जी सैकण्ड मास्टर का नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय है जिनके प्रबन्ध में स्कूल का कार्य अत्युत्तम रहा। रा० सा० ला० शिवप्रसाद जी (स्कूल के वर्तमान मैनेजर) और उनके भाई श्री रायबहादुर रंगीलाल जी डिस्ट्रिक्ट एण्ड सैशन जज उस समय के विद्यार्थियों में से ही हैं । मा० नत्थासिंह जी के समय में विद्यार्थियों की संख्या में भी वृद्धि हुई और स्कूल के

वार्षिक परिणाम भी अच्छे रहे। कई स्थानों को परिवर्तन करते २ अन्तमें यह स्कूल मिस्त्री रूपामल की कोठी में (जो कमेटी बाग़ के समीप है) चला गया। उस समय स्कूल को समाज की तरफ़ से २०) मासिक सहायता दी जाती थी। जिसमें १५) पंडित के लिये और शेष ५) चपरासी के लिये थे। क्योंकि उस समय आर्यस्कूल में धर्मशिक्षा के पंडित जी समाज का कार्य भी करते थे और चपरासी भी स्कूल और समाज का एक ही होता था। अवस्था यह थी कि किसी किसी समय इतने रुपयों का प्रबन्ध करना भी कठिन होजाता था। तब कभी ला० रामजीदास जी खज़ांची, कभी ला० रामरतन जी वकील, कभी ला० उमराओसिंह जी अपने पास से आवश्यकतानुसार सौ सौ रुपया स्टाफ़ को वेतन चुकाने के लिये दिया करते थे तब कहीं मासिक बिल चुकता था। मुन्शी माधोस्वरूप जी कई वर्ष तक मैनेजर रहे। किन्तु उनके विचार सामाजिक न होने के कारण आर्यपुरुषों का उनसे मतभेद रहा करता था। सार यह कि स्कूल के सन १८८६ से सन् १९०४ तक के समय में आर्य पुरुषों को स्कूल के लिये बड़ा परिश्रम करना और आर्थिक कठिनाईयां सहन करनी पड़ीं। परतु जिस तरह एक छोटा सा पौधा कभी महान् वृक्ष बन जाता है और ईश्वर विश्वास तथा पुरुषार्थ से प्रारम्भ किये हुए काम अवश्य सफल होते है, इसी प्रकार अन्त में इस स्कूल को भी ईश कृपा से सफलता प्राप्त हुई। फलतः सन १९०५ में जब से स्कूल का चार्ज स्कूल के वर्तमान मुख्याध्यापक श्री मा० रामलाल जी ने अपने हाथों में लिया तब से यह स्कूल विशेष उन्नति करने लगा और पञ्जाब के बड़े से बड़े स्कूल का विद्यार्थियों की संख्यावृद्धि में और अपने वार्षिक परिणामों में मुकाबला करने लगा। जहां आर्यसमाज के गत प्रस्तावों में एक प्रस्ताव ऐसा मिलता है कि प्रत्येक आर्यसभासद अपने बालकों को स्कूल में शिक्षा के लिये अवश्य भेजे और नगर निवासियों को अपने बालक भेजने के लिये प्रेरित करे वहां अब यह अवस्था होगई है कि स्कूल के अपने इतने बड़े विशाल भवन के होते हुए भी स्थानाभाव से विद्यार्थियों को प्रविष्ट कराने के लिये बड़ी २ सिफ़ारिशें तक आती है। पहले यह स्कूल मिडिल तक ही था परन्तु दिनोंदिन उन्नति को देख कर १९०६ ई० में मि. बोनोसाहिब भूतपूर्व हैडमास्टर गवर्नमैण्ट हाई स्कूल को स्टाफ़ में लेकर इस स्कूल को हाई स्कूल बना दिया। मि. बोनो की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय के लिये मा० छज्जुसिंह जी सम्पादक 'आर्य पत्रिका' स्कूल के इञ्चार्ज रहे। इनके पश्चात् श्री मा० रामलाल जी लाहौर से ट्रेनिंग स्कूल की परीक्षा पास करके इस स्कूल के हैडमास्टर हुए जो अब तक बराबर चले आरहे हैं। स्कूल की और बोर्डिंग की अपनी इमारत न थी। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए स्कूल कमेटी ने निश्चय किया कि जैसे भी हो स्कूल और बोर्डिंग की अपनी इमारत बनाई जावे। वर्तमान मैनेजर रा० सा० ला० शिवप्रसाद जी ने अपने स्वर्गवासी पिता श्री ला० रामजीदास जी के पदचिन्हों पर चलते हुए स्कूल को कई प्रकार की कठिनाइयों में से निकाल कर स्कूल का प्रबन्ध इस उत्तमता और योग्यता से किया कि आज स्कूल पञ्जाब के विख्यात स्कूलों में गिना जाता है। आपही उस समय से इस स्कूल के मैनेजर हैं। आपके समय में ही स्कूल बिल्डिंग के लिये आपने और समाज ने एक २ हज़ार रुपयों की लागत से स्कूल के कमरे
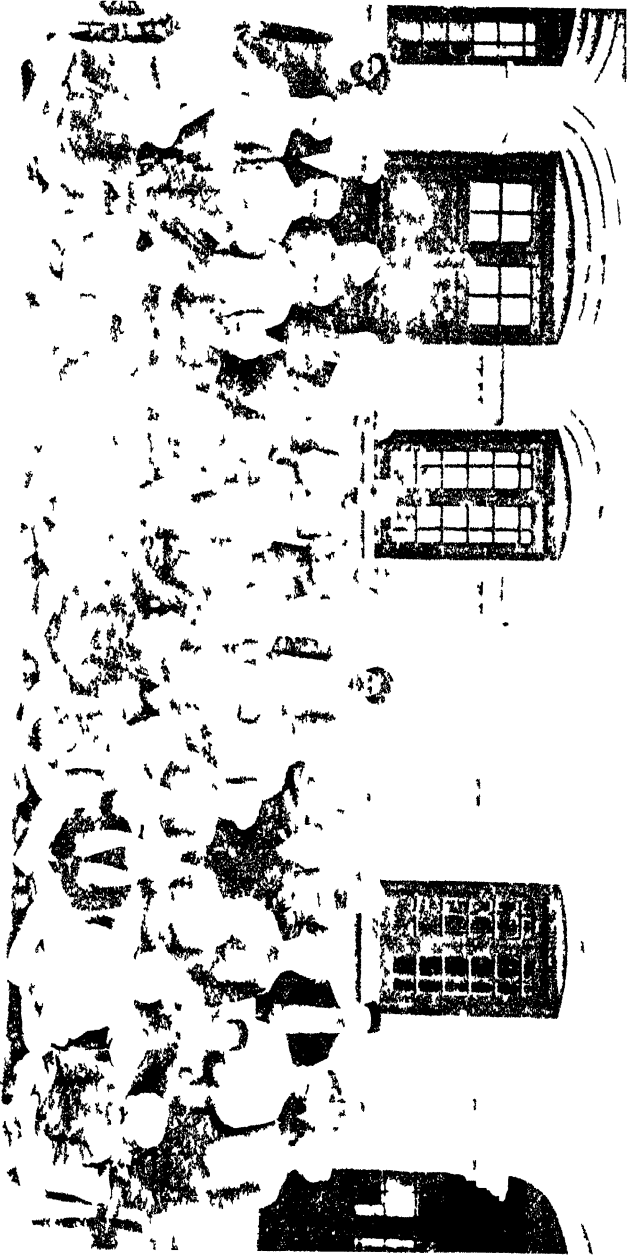
लुधियाना आर्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर १९३२

अध्यापकगण आर्य हाई स्कूल लुधियाना सन् १९३२ ई०

कुरसी पर बैठे हुए बाईं तरफ से ८वें नम्बर पर मा० राम लाल जी बी० ए० हैड मास्टर।
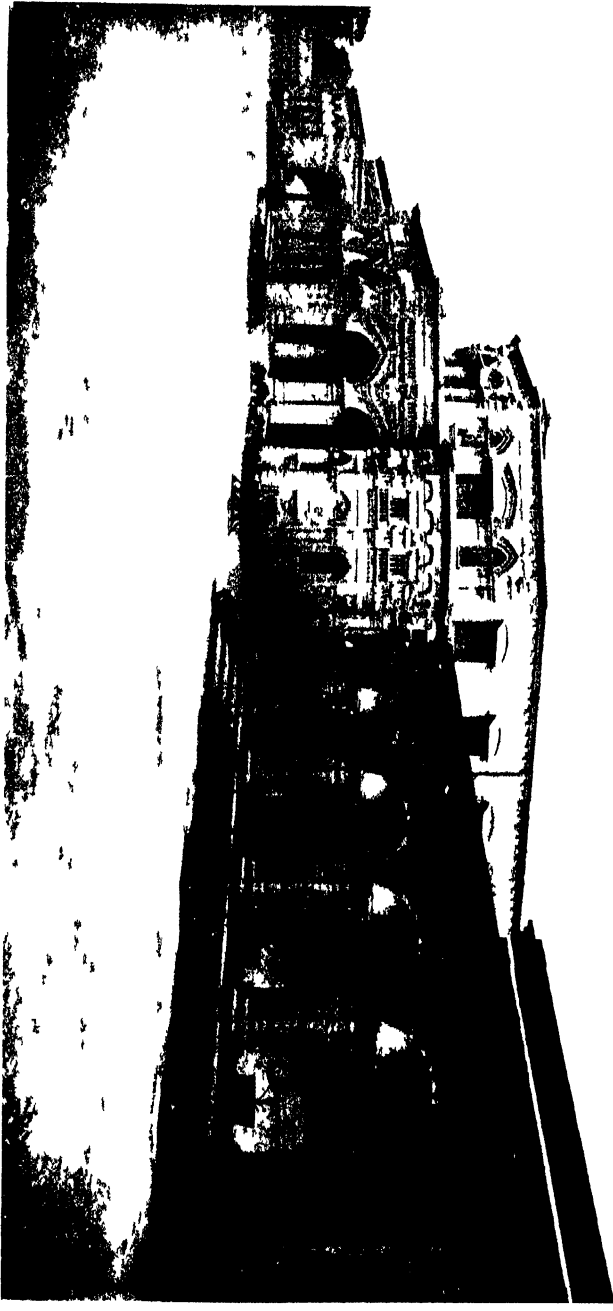
लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २९ अक्तूबर १९३२

आर्य्य हाई स्कूल के विशाल भवन का अगला दृश्य

आर्य्य हाई स्कूल के भवन का भीतरी दृश्य

बनवाने की अपील की। जहां स्कूल के पुराने विद्यार्थियों ने दूर २ से रुपया भेजना प्रारम्भ किया वहां नगरनिवासियों ने भी अपने प्रेम का परिचय देते हुए हर प्रकार से सहायता की। स्कूल और बोर्डिंग के लिये भूमि खरीदी गई और लुधियाना समाज के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि चैत्र कृ० ७ सं० १९६९ शनिवार तदनुसार २९-३-१९१३ को महात्मा मुन्शीराम जी (श्रद्धेय अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज) के कर कमलों द्वारा स्कूल भवन की आधारशिला रखी गई। भवन का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया। ईश कृपा से स्कूल और बोर्डिंग की वह विशाल बिल्डिंग तय्यार होगई जिसको आज आप देख रहे हैं।

आर्य्य हाईस्कूल का सन् १९३१ का वार्षिक विवरण

(१) सन् १९३१ में विद्यार्थियों की संख्या १४५० थी जिनमें १५० के लगभग सिख तथा इतने ही मुसलमान थे, शेष हिन्दू है। इस संख्या में स्कूल की कोई शाखा सम्मिलित नहीं है। पञ्जाब के किसी भी एक स्कूल के विद्यार्थियों की संख्या (शाखाओं को छोड़कर) इसके बराबर नहीं है। विद्यार्थियों की संख्या के लिहाज़ से पंजाब में यह सबसे प्रथम नम्बर का स्कूल है।

(२) इस स्कूल के अध्यापकों की संख्या ४४ है जिनमें १२ बी० ए० पास हैं, ३ बी० टी०, ११ एस० ए० वी०, ८ जे० ए० वी, २ ओ० टी० हैं। और सबके सब अध्यापक ट्रेन्ड हैं। इस स्कूल का शिक्षकवर्ग (Staff) स्थायी है और साधारण स्कूलों की तरह बदलता नहीं रहता। अध्यापकगण के परिश्रम और योग्यता का अनुमान इस स्कूल के वार्षिक परिणामों तथा छात्र-वृत्तियों की संख्या से पता लगता है जो प्रतिवर्ष इस स्कूल के विद्यार्थियों को मिलती हैं।

(३) अधिकारा परीक्षा (Matriculation) का परिणाम भी अत्युत्तम रहा। १८० विद्यार्थियों में से १६९ विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। केवल ११ विद्यार्थी ही फ़ेल हुए अर्थात् परीक्षा परिणाम ९४ प्रतिशतक रहा। ज़िला लुधियाना में प्रथम तथा द्वितीय भी इसी स्कूल के विद्यार्थी रहे। दो विद्यार्थियों ने पजाब यूनिवर्सिटी की छात्रवृत्तियें प्राप्त कीं। अधिकारी परीक्षा के परिणाम न केवल ज़िला लुधियाना में ही, बलिक पंजाब भर के स्कूलों में अच्छे रहे हैं। और गत तेरह वर्षों में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या ८१ प्रतिशतक से कम नहीं हुई। ९ वार ८५ प्रतिशतक से और चार वार ९० प्रतिशतक से अधिक रही है।

(४) १९३१ में इस स्कूल के विद्यार्थियों ने निम्नलिखित छात्रवृत्तियें प्राप्त कीं:—

(क) देशीय भाषाओं (Vernacular) की अन्तिम (Final) परीक्षा में ज़िला लुधियाना की ३ खुली छात्रवृत्तियों में से दो, और एक ज़िमींदारी वज़ीफा, इस तरह कुल तीन छात्रवृत्तियें प्राप्त कीं।

(ख) प्राईमरी परीक्षा में केवल पांच छात्रवृत्तियें ही इस नगर के विद्यार्थी प्राप्त कर सकते हैं, वह सारी इसी स्कूल के विद्यार्थियों ने ही प्राप्त कीं। यह सब मा० हरबंसलाल जी मुख्याध्यापक प्राईमरी स्कूल के पुरुषार्थ का फल है।

(५) विद्यार्थियों की शारीरिक उन्नति व सदाचार के लिये प्रत्येक संभव उपाय से काम लिया जाता है। जहां फुटबाल, हाकी, क्रिकेट और बालीवाल की कई टीमें शारीरिक बल प्राप्ति के लिये खेलता हैं वहां उन विद्यार्थियों के आचार और चरित्र का उत्तरदायित्व उनके अध्यापकों पर रहता है। स्वाध्याय के लिये प्रत्येक श्रेणी का अपना पुस्तकालय है। स्कौटिंग भी जारी है और स्कूल का अपना वैण्ड और आर्चैस्टरा (Archestra) है। और इन सब में यह स्कूल 'शिक्षा सप्ताह' के अवसरों पर पारितोषिक प्राप्त कर चुका है।

(६) हिन्दी और धर्म्मशिक्षा दूसरी श्रेणी से छठो तक प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ाई जाती है। देवनागरी का पढ़ना आवश्यक है। और प्रत्येक श्रेणा में धर्म्म शिक्षा का नियमपूर्वक प्रबन्ध है। इस वर्ष पंजाब आर्य शिक्षासमिति लाहौर की धर्म्मशिक्षा की परीक्षा में हाई और मिडल परीक्षा में इस स्कूल के विद्यार्थी प्रथम रहे और उन्होंने पारितोषिक प्राप्त किये।

(७) इस स्कूल में दलित जातियों के लड़के भी उच्च जाति के लड़कों के साथ ही बैठकर पढ़ते हैं और उनसे किसी प्रकार का भी भेद भाव नहीं रखा जाता। गत वर्ष भंगी जाति के एक विद्यार्थी ने इस स्कूल से मैट्रिक पास किया।

(८) बोर्डिंग हाउस—स्कूल का बोर्डिंग हाउस भी कई विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध है।

सन् १६३१ में २५० विद्यार्थी बोर्डिंग में रहते थे। जो केवल इस ज़िले के ग्रामों से हा नहीं आए हुये हैं बल्कि उन में से कई बहुत दूर २ से आए हुए है। बोर्डिंग के प्रबन्ध के लिए एक अधिष्ठाता और ३ अध्यापक, सहायता और प्रबन्ध के लिए नियत है जिनमें से एक स्कूल के सीनियर मास्टर और बी. ए. हैं। स्कूल के मुख्याध्यापक श्री मा० रामलाल जी भी बोर्डिंग के समीप ही निवास करते हैं जिससे विद्यार्थी उनकी देख रेख में रहें। सब विद्यार्थी दोनों समय सन्ध्या और हवन करते हैं। शिक्षा, व्यायाम, स्नान, चरित्र, स्वच्छता तथा भोजन का अत्युत्तम प्रबन्ध है। विद्यार्थियों की दूध, दही आदि की आवश्यकता पूरी करने के लिए विशेष हलवाई का भी प्रबन्ध है।

गणेशीलाल आर्य कन्या पाठशाला

आर्य समाज लुधियाना ने जहां बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध किया वहां उसके हृदय में आरम्भ से कन्याओं की शिक्षा की उत्कट इच्छा रही। परन्तु संसार में प्रत्येक कार्य अपने समय पर ही होता है, समय आने पर स्वर्गीय गणेशी लाल जी के हृदय में कन्याओं को भी सुशिक्षित करने का विचार प्रवल वेग से अंकुरित हुआ। उनके दिल में आर्य समाज की सच्ची लगन थी और वह अपना बहुतसा समय सामाजिक कामों में ही दिया करते थे। और सदैव आर्यसमाज लुधियाना में एक आदर्श कन्यापाठशाला खोलने का विचार अधिकारियों के सामने रखते थे। परन्तु धनाभाव के कारण अधिकारी गण सदैव मौन साध लेते थे। अन्त में ला० गणेशी लाल ने अपने विचार को कार्यरूप में परिणत करने के लिए अपनी मृत्यु से कुछ पहिले १५००) आर्यसमाज को कन्यापाठशाला खोलने के लिए दिया। आर्य समाज लुधियाना ने गणेशी लाल आर्य कन्या पाठशाला के

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी महोत्सव २१ अक्तूबर १९३२

गणेशी लाल आर्य्य कन्या पाठशाला लुधियाना का अध्यापक वर्ग

लुधियाना आर्य्य समाज अर्द्ध शताब्दी २१ अक्तूबर ११३२
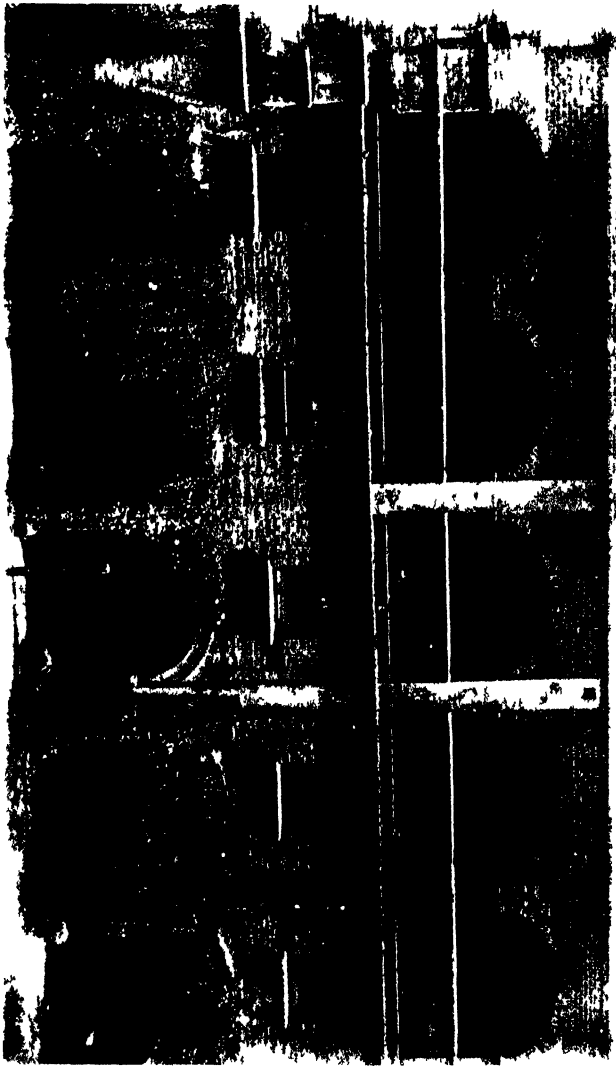
गणेशीलाल आर्य्य कन्या पाठशाला बिल्डिंग का दृश्य

नाम से २१ अगस्त १६०३ ई० को ला० मंगत राय कोठीवालों के मकान में १६ छात्राओं और ३ अध्यापिकाओं से एक पाठशाला जारी करदी। ला० गणेशी लाल की मृत्यु के पश्चात् श्रीमती जानकी देवी जी ने अपने स्वर्गीय पति का अनुकरण करते हुये अपनी सब सम्पत्ति स्त्री शिक्षा के लिए आर्य समाज लुधियाना को भेंट कर दी। उनके इस त्याग भाव से प्रभावित हो कर समाज की अंतरंग सभा ने यह निश्चय किया कि उनके जीवन पर्य्यन्त उनकी सहायता की जावेगी। एक बार श्रीमती जानकी देवी जी की रिश्तेदार श्रीमती चमेली देवी जी ऐसी बीमार हुईं कि उनको स्थानीय ज़नाना मिशन हस्पताल में दाखिल करने की आवश्यकता पड़ी। जहां एक ओर श्रीमती जानकी देवी निःस्वार्थ भाव से उनकी सेवा करतीं वहां हस्पताल में दवादारु से निवृत्त हो कर धर्म चर्चा भी किया करतीं। हस्पताल में कार्य करने वाली देवियां उनकी निर्भयता तथा तर्क पूर्ण विचारों से निरुत्तर हो कर चिढ़ जाती थीं। संयोगवश श्रीमती चमेली देवी जी की हस्पताल में ही मृत्यु हो गई। श्रीमती जानकी देवी जी पर दूध में आक का दूध मिला कर विष से प्राण लेने का झूठा अभियोग खड़ा कर दिया। यहां तक कि पहली अदालत ने उनको सेशन सुपुर्द कर दिया। इस समाज ने निर्दोष जानकी देवी जी की सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझ कर उनकी भरसक सहायता की। जहां साक्षी के लिए बाहर से बड़े २ डाक्टर बुलाए गए वहां समाज ने सफ़ाई (Defence) के लिए योग्य से योग्य वकील भी खड़े किए। सरकार की ओर से लाहौर के प्रसिद्ध बैरिस्टर मि० पैटमैन आए तो आर्यसमाज ने स्वर्गीय रायज़ादा भगतराम जी को सफ़ाई के लिए खड़ा किया। कई दिन तक मि० एन. ए. रोज़ सैशनजज के आगे बहस होती रही अन्त में सत्य की विजय हुई और श्रीमती जानकी देवी जी निर्दोष सिद्ध हुईं। स[illegible] मान सहित बरी की गईं। इस मुकदमे पर आर्यसमाज लुधियाना का १३००) के लगभग खर्च हुआ।

उन दिनों योग्य अध्यापक और अध्यापिकाओं का मिलना प्रायः कठिन ही था परन्तु सौभाग्य वश आर्य समाज को एक सदाचारी, स्त्री शिक्षा के प्रेमी और ऐसे उत्तरदायित्व पूर्ण काम के योग्य श्री पं० लछमन दास मिल गये और उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ कर पाठशाला में मुख्याध्यापक होना स्वीकार कर लिया। उक्त पंडित जी ने २७ वर्ष तक इस पाठशाला में मुख्याध्यापक का कार्य करते हुए अपने प्रयत्न से पाठशाला को वर्त्तमान उन्नत अवस्था तक पहुँचा दिया। पाठशाला कमेटी ने उनकी वृद्धावस्था के कारण उनको पैन्शन दे कर धन्यवाद सहित सेवाओं से मुक्त कर दिया।

सन् १६०६ ई० में इस पाठशाला के साथ रायसाहिब श्री केदारनाथ जी की सुपुत्री बीबी लज्जावती के नाम पर कन्या आश्रम भी खोलागया था। देवतास्वरूप रायसाहिब केदारनाथ जी जबतक यहां रहे इस पाठशाला की तन-मन धन से सहायता करते रहे। और स्वर्गीय श्री० पं० नौरंग राय जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पार्वतीदेवी जी बड़े त्याग और निःस्वार्थ भाव से अवैतनिक इस आश्रम की सेवा करते रहे। धनाभाव से यह आश्रम बहुत देरतक चल नहीं सका।

पाठशाला की कन्याओं की संख्या मे दिनोंदिन वृद्धि के कारण किराये के मकान अपर्याप्त सिद्ध हुए। अन्त में पाठशाला कमेटी ने ८०००) मे भूमि खरीद कर पाठशाला का निजी भवन बनवाना आरम्भ कर दिया "जिस मे डाक्टर वृन्दावन जी भूतपूर्व प्रबन्धकर्ता तथा ला० लछ्मूराम नय्यड़ कोषाध्यक्ष का हाथ था"।

यह भवन अब दो मंज़िला तयार हो चुका है। सं० १९२३ ई० में कन्या पाठशाला अपने भवन मे आगई, यह विशाल भवन ३१०००) इकतीस हज़ार रुपये के मूल्य का है और श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम रजिस्टर्ड है।

पाठशाला का वर्तमान संक्षिप्त विवरण

(१) कन्याओं की संख्या: इस पाठशाला मे इस समय ४२० कन्यायें. शिक्षा प्राप्त करती हैं।

(२) शिक्षकवर्ग:—इस समय पाठशाला मे १३ अध्यापिकायें. २ अध्यापक, १ प्रज्ञाचक्षु संगीताध्यापक अध्यापन का कार्य्य करते है। कन्याओ को घर से लाने व छोड़ने के लिये ३ बुलावियें तथा १ वृद्ध चपरासी भी नियत है।

(३) परीक्षा परिणाम:—इस पाठशाला के परीक्षा परिणाम बहुत अच्छे रहते है. इस वर्ष (१९३२) में २१ कन्याओं मे से १८ कन्यायें उत्तीर्ण हुई है. परीक्षा परिणाम ८५॥ फी सदी रहा। गत वर्षों में भी ७५ प्रति शतक से १०० प्रति शतक तक रहा है।

(४) व्यायाम:—पाठशाला मे कन्याओ के व्यायाम के लिये भी समय निश्चित है पाठशाला के खुले आंगन में कन्यायें खूब खेलती कूदती है।

(५) सिलाई की शिक्षा:—का प्रबन्ध भी उत्तम है। सन १९३० के स्थानीय "शिक्षा सप्ताह" मे इस कन्या पाठशाला की सिलाई का काम गया था जिस मे तीनों इनाम ही इस पाठशाला की कन्याओं ने प्राप्त किये थे।

(६) धर्म्म शिक्षा:—पाठशाला मे आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शिक्षा समिति की नियत पुस्तकें तथा 'आर्य्यसिद्धान्त दर्पण' आदि पुस्तकें धार्मिक ज्ञान के लिये पढ़ाई जाती हैं। और दूसरी श्रेणी से ही कन्याओं को सन्ध्या आदि कण्ठस्थ कराया जाता है।

(७) पाक शिक्षा: पाठशाला में कन्याओं को भोजन बनाने की विधि भली भान्ति सिखाई जाती है।

(८) मासिक व्यय—इस समय इस पाठशाला का मासिक व्यय ४७५) है।

(९) आंग्ल भाषा:—इस पाठशाला मे सन १९२८ मे मिडिल विभाग की कन्याओं के लिये अंगरेज़ी शिक्षा का भी प्रबन्ध कर दिया गया है।

(१०) संगीत:—कन्याओं को हारमोनियम से उत्तमोत्तम भजनों की संगीत शिक्षा दी-जाती है। एक प्रज्ञाचक्षु संगीतज्ञ उसके शिक्षक हैं।

(११) बाला समाज:—इस पाठशाला में कन्याओं की एक बाला समाज भी है जिसमें

प्रायः कन्याओं की ही प्रार्थना तथा व्याख्यान होते हैं। इस बाला समाज के प्रति मंगलवार को पाठशाला भवन में ही अधिवेशन होते हैं।

(१२) इस पाठशाला में कन्याओं के अध्ययन और ज्ञान वृद्धि के लिये १ पुस्तकालय भी है जिस में सामाजिक साहित्य रखा गया है।

(१३) इस पाठशाला में मिडल की श्रेणियों में संस्कृत पढ़ना आवश्यक है जब से इस पाठशाला के ला० उधोराम जी पैन्शनर मैनैजर तथा मा० श्रीकृष्ण जी मुख्याध्यापक नियत हुवे हैं तब से यह पाठशाला निरन्तर उन्नति के मार्ग पर है।

आर्य्यसमाज लुधियाना की सम्पत्ति और वार्षिक बजट

समय था जब आर्य पुरुषों को साप्ताहिक सत्संग में मिल बैठने और उपासना के लिये अपना कोई धर्म्म मन्दिर नहीं था और आर्यसमाज के आधीन संस्थाओं के लिये भी किराये के मकानों में भी पर्य्याप्त स्थान न था, वहां अब ईशकृपा से सवा तीन लाख ३२५०००) रुपये के लगभग की इसकी अपनी सम्पत्ति है।

(१) १३४०००) आर्यस्कूल के बोर्डिंग का भवन और भूमि का मूल्य है।

(२) ३१०००) की कन्या पाठशाला है।

(४) ३००००) का समाज मन्दिर है।

वार्षिक बजटः—इस समय लगभग ३६०००) वार्षिक स्कूल का खर्च है, ५७५०) वार्षिक कन्या पाठशाला का और १०००) आर्यसमाज का निजी खर्च है।

लुधियाना ज़िला की समाजें

लुधियाना एक बड़ा विस्तृत ज़िला है इसमें निम्नलिखित समाजें हैं और उत्साही कार्य्य-कर्त्ता हैं:—

(१) जगराओंः -इस समाज का अपना समाज मन्दिर है । पिछले कार्यकर्त्ता ला० तिलकराम जी वैश्य आदि थे। इस समय इस समाज के मन्त्री हकीम प्यारेलाल जी हैं और जगराओं मण्डी में समाज का काय्र्य करने वाले ला० अमरचन्द जी हैं।

(२) समराला—यह समाज सन् १५ से स्थापित है। इस समाज का अपना समाज मन्दिर सभा के नाम रजिस्टर्ड है। पिछले काम करने वालों में ला० मुकन्दलाल जी हैं । वर्त्तमान अधिकारी ला० नानकचन्द साहिब प्रधान और पं० चेतराम जी मन्त्री है।

(३) सिध्वांबेटः—यह समाज ५ जून सन् २७ को स्थापित हुई थी । म० रूड़ाराम जी प्रधान, म० भगतराम जी मन्त्री हैं। यहां पर स्त्री समाज भी है जिसके प्रत्येक मंगलवार को नियम पूर्वक अधिवेशन होते हैं।

(४) रायकोटः— यह समाज लगभग ४० वर्ष से स्थापित है। इस समाज का अपना ६०००) के

मूल्यका मंदिर है और सभा के नाम रजिस्टर्ड है। यह मन्दिर ला० नन्दीमल, ला० राधाकृष्णजी के दान का फल है। इस समय समाज के डा० गुरुप्रशादजी प्रधान, ला० तिलकराम जी मन्त्री हैं। गुरुकुल रायकोट भी आर्यसमाज की प्रसिद्ध संस्थाओं में से है जो इस नगर के समीप ही है। इसके आचार्य आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी गंगागिरी जी महाराज हैं और यह आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के आधीन है।

(५) ब्रह्मीः—रायकोट के समीप ही एक ग्राम है। म० प्रतापसिंह जी यहां की समाज के मन्त्री हैं।

(६) खन्नाः—यह समाज भी लगभग ४० वर्ष से है परन्तु अब ८ वर्ष से यहां नियमपूर्वक कार्य्य हो रहा है। इस समय ला० प्यारेलाल जी प्रधान तथा म० रामानन्द जी मन्त्री है।

(७) पक्खोवालः—यह समाज लगभग ४ वर्ष से कार्य्य कररहा है। इस समय बा० रामरक्खा मल जी प्रधान हैं और म० बाबूराम जी मन्त्री हैं।

(८) भैनीरोड़ाः—यह समाज भी लगभग ४० वर्ष से है। पिछले कार्य्यकर्त्ताओं में सर्दार हरिसिंह जी प्रधान और म० त्रिलोकचन्द जी मन्त्री थे। आजकल सर्दार सम्पूरणसिंह. बा० खुशी राम जी व स० हाकिमसिंह जी काम करने वालों में है।

(९) सेहालाः—यह समाज १६ मग्गर संवत् १६७७ तदनुसार ३-१२-२० से स्थापित है। इस समाज के मन्त्री म० जमनादास जी है।

(१०) सान्हेवालः—यह समाज १४ फाल्गुण संवत् १९७७ तदनुसार १४ फरवरी सन २१ से स्थापित है। इस समाज का अपना मन्दिर बाज़ार के मध्य में है और सभाके नाम रजिस्टर्ड है। यह मन्दिर वर्तमान प्रधान ला० देवीदयाल जी के दान का फल है। बा० द्वारकादास जी कपिल मन्त्री हैं। यहां पर एक आर्य कन्या पाठशाला भी है।

आर्य समाज लुधियाना

के

सन् १८८२ से अब तक के प्रधान और मन्त्री

सन्	प्रधान	मन्त्री
१८८२	ला० शिवशरणदास जी	पं० सालिगराम जी वकील
१८८३	,, ,,	,, ,,
१८८४	,, ,,	,, ,,
१८८५	ला० रामरतन जी वकील	ला० मनसाराम जी वकील
१८८६	,, ,,	,, ,,
१८८७	,, ,,	ला० उमराओसिंह जी
१८८८	,, ,,	डा० विशेशरदयाल जी
१८८९	,, ,,	ला० उमराओसिंह जी
१८९०	,, ,,	,, ,,
१८९१	,, ,,	,, ,,
१८९२	ला० तुलसीराम जी वकील	,, ,,
१८९३	,, ,,	,, ,,
१८९४	बा० शिवशरणदास जी	ला० पूर्णचन्द जी वकील
१८९५	ला० तुलसीराम जी वकील	ला० उमराओसिंह जी
१८९६	,, ,,	,, ,,
१८९७	ला० पूरणचन्द जी वकील	,, ,,
१८९८	भाई लालसिंह जी	ला० पूरणचन्द जी वकील
१८९९	,, ,,	ला० लब्भुराम जी नय्यड़
१९००	,, ,,	,, ,,
१९०१	,, ,,	,, ,,
१९०२	,, ,,	,, ,,
१९०३	ला० उमराओसिंह जी	ला० शिवप्रसाद जी
१९०४	,, ,,	,, ,,
१९०५	,, ,,	,, ,,
१९०६	,, ,,	,, ,,
१९०७	,, ,,	,, ,,

सन्	प्रधान	मन्त्री
१६०८	,, ,,	पं० नौरंगराय जी
१६०६	,, ,,	,, ,,
१६१०	,, ,,	ला० गुरुदासमल जी बाहरी
१६११	ला० उमराओसिंह जी	,, ,,
१६१२	,, ,,	,, ,,
१६१३	,, ,,	,, ,,
१६१४	,, ,,	,, ,,
१६१५	,, ,,	,, ,,
१६१६	,, ,,	,, ,,
१६१७	रा० सा० ला० शिवप्रसाद जी	,, ,,
१६१८	,, ,,	ला० सालिगराम जी वकील
१६१६	,, ,,	ला० बाबूराम जी गुप्त
१६२०	,, ,,	ला० गंगासहाय जी
१६२१	,, ,,	,, ,,
१६२२	,, ,,	ला० बाबूराम जी गुप्त
१६२३	,, ,,	,, ,,
२-६-२३	को निर्वाचित हुए और ३०-१०-२३ को इनके त्यागपत्र देने के कारण	
	दीवान रामशरणदास जी	मा० सत्यपाल जी
१६२४	मा० भानाराम जी	ला० बाबूराम जी गुप्त
१६२५	रा० सा० ला० शिवप्रसाद जी	,, ,,
१६२६	,, ,,	,, ,,
१६२७	पं० नौरंगराय जी	,, ,,
१६२८	डा० बख्तावरसिंह जी	ला० मंगलसेन जी आनन्द
१६२६	,, ,,	ला० बाबूराम जी
१६३०	,, ,,	,, ,,
१६३१	,, ,,	,, ,,
१६३२	,, ,,	,, ,,

प्रार्थना

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

प्रिय आर्यवृन्द !

आर्यसमाज लुधियाना का अर्द्ध शताब्दी महोत्सव मनाते हुए आइये सब मिलकर प्रत्येक आर्य के लिये 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का आदेश करने वाले परमपिता परमात्मा से वैदिकधर्म्म के प्रचार के लिये बल की याचना करें। ताकि हम कर्त्तव्य पालन करते हुए आगामी ५० वर्षों में इस नगर और जिला के नरनारियों को वेदामृत पान करवा सकें। ईश्वर हमको इसके लिये बल और सामर्थ्य दें ताकि सब नरनारी एक ही कल्याणकारी वैदिकधर्म्म की पताका के नीचे 'वैदिक धर्म की जय' ! का नाद गुँजा सकें।

प्रार्थी —

बाबूराम गुप्त
मन्त्री आर्यसमाज
लुधियाना

ओ३म्

आर्य्य समाज के नियम

१—सब सत्यविद्या और जो पदार्थविद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्य्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना आर्य्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में स्वतन्त्र रहें।